सप्तम अध्याय

गिरिराज किशोर के नाटकों में उद्देश्य-शिल्प

सप्तम अध्याय

" गिरिराज किशोर के नाटकों में उद्देश्य–शिल्प "

1 नाटक में उद्देश्य का महत्त्व––

किसी भी रचना के पीछे रचनाकार का निश्चित उद्देश्य रहता है । यदि वह अपनी रचना के पीछे कोई उद्देश्य नहीं रखता है तो वह रचना सफल नहीं हो सकती । बिना प्रयोजन की रचना का कोई महत्व नहीं होता । कुछ नहीं तो कम–से–कम मनोरंजन तो उससे मिलता ही है । व्यक्ति और उसका परिवेश साहित्य में संपूर्णता के साथ अभिव्यक्त होता है । प्राचीन भारतीय आचार्यों ने साहित्य के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए उसमें ब्रहमानंद सहोदर की प्राप्ति का तो उल्लेख किया है साथ ही यश और धन की प्राप्ति को भी उसी में रख दिया है। उनके द्वारा निर्दिष्ट रस की प्राप्ति एक ऐसा उद्देश्य है जिसकी अपेक्षा आज भी साहित्य से की जाती है ।दर्शक सर्व प्रथम इस अलौकिक आनंद की प्राप्ति करना चाहता है । इस प्रकार नाटक दर्शक के अंतर को रसमग्न करउसे आल्हादित कर देता है । नाटक के द्वारा अनेक प्रयोजनों की अपेक्षा की जाती है ।

नाटक में उद्देश्य का महत्त्व बताते हुए डॉ. शाति मलिक कहती है –" यह तत्व नाटक की आत्मा है , क्योंकि बिना किसी सुनिश्चित उद्देश्य तथा प्रेरणा व अनुभूति के धरातल से लिखा गया नाटक शक्ति एवं प्रभावोत्पादकता के गुण से वंचित ही होता है । वास्तव में यही वह तत्व है, जिसे व्यंजित एवं चरितार्थ करने के निमित्त नाटककार कथानक पात्रों एवं शैली की अवतारणा करता है ।"[1] नाटक में उद्देश्य कीउपयोगिता को बताते हुए डॉ. कृष्णदेव झारी कहते हैं –" जितना ही उद्देश्य महान होगा, उतनी ही रचना श्रेष्ठ होगी । जो लेखक जितनी अधिक उदात्त मानवीय संवेदनाओं के रूप में अपना जीवनोद्देश्य प्रकट करता है, वह उतना महान कलाकार बनता है। उद्देश्य की सिद्धि उदात्त रागों में रस–रूप में ही करनी चाहिए, अन्यथा लेखक के उपदेशक या जीवन–व्याख्याता बन जाने का डर रहता है ।"[2]

---

1 डॉ. शांति मलिक–हिंदी नाटकों की शिल्प–विधि का विकास, पृष्ठ–524 ।

2 डॉ. कृष्णदेव झारी – काव्यशास्त्रीय निबंध: भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र–1, पृष्ठ–202 ।

इस प्रकार प्रत्येक नाटककार किसी–न–किसी उद्देश्य से अपनी नाट्य-कृति का निर्माण करता है । नाटक की कथावस्तु किसी उद्देश्य को लेकर ही चलती है । प्राचीन काल में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के उद्देश्य सामने रखकर लिखा जाता था और अपना उद्देश्य स्पष्ट रूप से नाटक के प्रारंभ में या अंत में नाटककार पात्रों के मुँह से स्पष्ट बताता था । वस्तुतः नाटक मनोरंजन का मुख्य साधन है किंतु उसमें उद्देश्य को सामने रखकर घटना का विकास किया जाता है । नाटककार कथ्य के अनुरूप ही कथावस्तु का चयन करता है । हर एक नाटककार की परिस्थितियाँ, स्वभाव एवं रूचियाँ अलग–अलग हुआ करती हैं । वह समकालीन परिस्थितियों को देखकर कुछ प्रतीक रखकर नाटकों का निर्माण करता है । वह अपनी समस्याओं को सुलझाकर अपनी कृति में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है ।

विचार तत्व का सीधा संबंध लेखक के विचारों से है जिसके प्रतिपादन के लिए लेखक त्रासदी या नाटक की रचना करता है । पात्रों के विचार शून्य में उत्पन्न नहीं होते । नाटककार अपने विचारों का प्रतिपादन विभिन्न पात्रों को माध्यम बनाकर करता है । नाटककार अपने विचारों का प्रतिपादन करने के लिए ही नाटक के समस्त अंगों, कथा–विधान, चरित्र–चित्रण आदि की योजना करता है । उद्देश्य को सामने रखकर ही नाटक के प्रसंग, घटनाएँ और संघर्ष परिचालित होते हैं । नाटक का अंतिम प्रभाव ही उद्देश्य को स्पष्ट करता है । नाटक के उद्देश्य के आधार पर ही नाटक का स्वरूप निश्चित होता है । अव्यक्त उद्देश्य नाटक के कलात्मक स्वर को बढ़ाता है । इस प्रकार मानव जीवन की यथार्थ और कलात्मक व्याख्या प्रस्तुत करना ही नाटक का प्रमुख उद्देश्य होता है ।

2 **किशोर जी के नाटकों का उद्देश्य शिल्प––**

"नरमेध" नाटक का उद्देश्य आधुनिक नारी की दूषित मनोवृत्तियों का संस्कार करना है, जिसके कारण उसका दाम्पत्य जीवन अव्यवस्थित हो जाता है । तारा के चरित्र द्वारा आधुनिक कुंठाग्रस्त विवाहिता नारी की मनोवेदना का परिचय मिलता है। इन्द्रराव की पत्नी तारा पति के अधूरे प्रेम से असंतुष्ट रहती है और अपने पूर्वगामी नरेन के साथ बिताए हुए सुखमय क्षणों को स्मृति में संजोये रहती है । नीरा से वह कहती है " मेरी गलतियों का जिक्र न कर । जो बच सके, बचा ले । नरेन ने भी यही किया, तूने भी यही किया और इन्द्र भी यही कर रहे हैं । मुझे छोड़ दे, जलने दें ।"[1] तारा का यह कथन उसकी घुटन को व्यक्त करता है साथ ही नाटक के उद्देश्य पर भी प्रकाश डालता है।तारा

---

1 गिरराज किशोर – नरमेध, पृष्ठ – 21 ।

की तरह ही दूसरा पात्र है वंती । वह एक को मित्र के रूप में दूसरे को पति के रूप में चाहती है । वंती के चरित्र द्वारा नाटककार आधुनिक युवतियों के प्रेम के वासनात्मक दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है ।

इस नाटक में तारा के मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में प्रेम के त्रिकोण को चित्रित किया गया है । वंती और वंदु का प्रेम संबंध स्त्री-पुरूष के संबंधों का एक आयाम मात्र है । उसका महत्त्वपूर्ण स्वरूप तारा के असफल प्रेम की निराशा से ग्रस्त चरित्र के माध्यम से व्यंजित किया गया है । तारा अपने प्रथम प्रेम की असफलता के कारण पुनः प्रेम करने की क्षमताओं को खो बैठती है । परिणामतः पति के प्रति उसके संबंध सहज नहीं हो पाते । अतः इन्द्रधव उससे कटकर बड़े दब्बू स्वभाव के बन जाते हैं ।तारा के जीवन की विडंबना है कि वह स्वयं भी इस पारिवारिक विघटन का शिकार होती है। घर के घुटनभरे माहौल को महसूस करते हुए अंकन कहता है-" मुझे लगता है इस घर में न दीवारें हैं, न छतें । घर का अहसास लिये हम आसमान के नीचे आ खड़े हुए हैं । माँ, पापा, तुम, मैं सब होशोहवास खो बैठे हैं । जो आता है वही घर के अहसास में एक तरेर डाल देता है ।"[1]

प्रस्तुत नाटक तारा के निजी संबंध और व्यक्तिगत अनुभव के कारण पति एवं पुत्रों के जीते जी नाटकीय यंत्रणा भोगने की विवशता को प्रस्तुत करता है । यह नाटक एक स्त्री की सनक की खातिर एक परिवार की बर्बादी का इतिहास प्रस्तुत करता है । इस प्रकार इस नाटक का उद्देश्य आधुनिक नारी की दूषित मनोवृत्तियों को स्पष्ट करना है, जिसके कारण उसका दाम्पत्य जीवन अव्यवस्थित हो जाता है ।

"प्रजा ही रहने दो " किशोर जी का बहुचर्चित नाटक है । इसके बारे में अनेक विद्वानों ने अपना मंतव्य अभिव्यक्त किया है । महाभारत की विनाश-लीला के मूल में अंध शासकों का अंध प्रशासन तो रहा ही , सिंहासन प्राप्ति की अंधी लालसा भी रही । वह जितनी कौरवों में थी, पाण्ड़वों में उससे कम नहीं थी । सामयिक परिवेश में यह संदर्भ यथावत् विद्यमान है । गिरिराज जी का यह नाटक महाभारत युगीन कथा के माध्यम से इसी यथार्थ को संप्रेषित करता है । समकालीन राजनीति का पर्दाफाश करना इस नाटक का मूल उद्देश्य है । यह नाटक समकालीन राजनीति पर व्यंग्य कराता है । सेवक और उद्घोषक की बातचीत ने नाटक को सीधे आधुनिक संदर्भ से जोड़ दिया है ।

---

1 गिरिराज किशोर – नरमेध, पृष्ठ – 14 ।

सुयोधन, गांधारी और धृतराष्ट्र की सिंहासन की जो अंधी लालसाएँ थी वे आज के राजनेताओं में भी पाई जाती हैं । आठवें दशक के समय देश की राजनीति दयनीय थी । राजनेताओं को देश की जनता की परवाह नहीं थी । इस अनुभव को नागरिकों की स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ , फुसफुसाहट, स्वीकृति–अस्वीकृति एवं आक्रोश–विवशता इन सब में पाया जा सकता है । राजनीति की यह दयनीय दिशा देखकर किशोर जी उद्विग्न हुए थे, उसी वक्त उन्होंने इस नाटक का लेखन किया । उन्होंने इस नाटक द्वारा राजनीति की यथार्थता का प्रत्यक्ष दर्शन कराया जिसमें महाभारत की घटना को केवल आधार के रूप में लिया है । शासकों के दमन–चक्र में पीसती हुई जनता का चित्रण करना भी इस नाटक का एक और उद्देदश्य है ।

आज की राजनीति के सत्तालोलुप और स्वार्थी व्यक्तियों के चित्र इस नाटक में हैं । आज जबकि चारों ओर स्वार्थ–पूर्ति का बोलबाला है और राजनीतिज्ञ व्यक्तिगत हितों के लिए राष्ट्रीय हितों को आघात पहुँचा रहे हैं । तब यह नाटक प्राचीन काल का दर्पण न रहकर आधुनिक राजनीति को भी दर्शाता है । वस्तुतः प्राचीन कथा पर आधुनिक विचारों का पुट देकर जिस कौशल से भूत और वर्तमान का गठबंधन कर दिया है, वह इस नाटक की प्रमुख विशेषता है ।

"प्रजा ही रहने दो " नाटक के उद्देश्य के बारे में नरनारायण राय कहते हैं –" इस नाट्य-रचना की समकालीनता और प्रासंगिकता का एक सबसे स्पष्ट प्रमाण और उदाहरण यह है कि देश में घोषित आपात् स्थिति और तत्कालीन प्रशासन तंत्र का सत्ता में बने रहने की अंधी कोशिशों के संदर्भ में भी इस नाट्य–रचना की तात्कालिक व्याख्या की जा सकती है ।"[1] इस नाटक में ऐसे भी कुछ वाक्य हैं जो निरंतर चोट करते हुए हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं ।उदा. "सब कुछ बदल गया । राजा, राज्य, विचार और .... राजनीति । हमने नपुसंक राजा से अंधे राजा तक एक यात्रा पूरी कर ली.... जुआ ही सर्वोपरि है ।"[2] आदि अनेक वाक्य हैं जो नाटक में निहित समसामयिक संदर्भ को व्यापक अर्थ देते हैं । किशोर जी का यह नाटक आधुनिक जीवन संदर्भों से जुड़ा हुआ है और विभिन्न समकालीन व्याख्याएँ भी प्रस्तुत करता है । महाभारत में मात्र एक परिवार की राजसत्ता की लिप्सा ने पूरी प्रजा को ही निगल लिया । समसामयिक राजनीति का भी चित्र इससे अलग नहीं है । इस प्रकार यह नाटक अपने पौराणिक परिवेश में आज की राजनीतिक मूल्यहीनता और अंधेपन के संकेत देता है ।

---

1 नरनारायण राय – आधुनिक हिन्दी नाटक:एक यात्रा दशक, पृष्ठ – 276 ।

2 गिरिराज किशोर –प्रजा ही रहने दो – पृष्ठ – 9 ।

उद्देश्य की दृष्टि से किशोर जी की महत्त्वपूर्ण कृति का नाम " घास और घोड़ा " है । इस नाटक के सभी समझौते बेबस परिस्थिति के ही समझौते हैं । प्रधान का बेटा विमला की शादी होते हुए भी उससे नाजायज संबंध रखता है । विमला भी अपना पति बूढ़ा होने के कारण प्रधान के बेटे से नाजायज संबंध रखती है । हजारीलाल एक धनि आदमी हैं । उनकी भी बेटी शादी के पहले ही जाट ड्रायवर से नाजायज संबंध रखती है। उसकी शादी जाट ड्राइवर से न होके के कारण हजारीलाल की पत्नी ख्यालीराम के बेटे से अपनी बेटी की शादी करना चाहती है । हजारीलाल अपनी पत्नी से कहते हैं " अच्छा वर तुम्हारी बेटी को रखेगा ? लड़कियाँ बरतन-भांड़ों की तरह नहीं होती कि टांका लगाकर इस्तेमाल करने लगो ।"[1] इस कथन द्वारा लेखक सच्चाई की ओर संकेत करता है और व्यंग्य भी करता है ।

इसमें नाटककार ने द्वारिका, प्रधान का बेटा, विमला, हजारीलाल की बेटी, जाट ड्राइवर के और अन्य चरित्रों द्वारा बड़ी कुशलता से विवाह संबंधी समस्याओं को दिखाया है । इस कृति में नाटककार ने प्रेम और विवाह की समस्याओं को बड़े ही स्वाभाविक एवं यथार्थ ढंग से उभारते हुए वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन की असफलता एवं अशांति और उनके अंतर्विरोधों के मूल कारणों का यथार्थता से उद्घाटन और विश्लेषण किया है और यही लेखक का मूल उद्देश्य है । लेखक और निर्देशक की समस्याओं को दिखाना भी इस नाटक का प्रमुख उद्देश्य है ।

प्रधान के बेटे ने विमला के पति की हत्या की थी । लेकिन दरोगा रिश्वत लेकर बेगुनाह विमला के भाई को फाँसी के तख्ते पर चढ़वाता है । इस प्रकार दरोगा के चरित्र द्वारा रिश्वत की समस्या को भी दिखाना लेखक का उद्देश्य है । इस प्रकार गिराराज किशोर जी ने एक साथ ही अनेक समस्याओं को दिखाकर प्रस्तुत नाटक को सफल बनाया है ।

समसामयिक राजनीति का पर्दाफाश करना " चेहरे-चेहरे किसके चेहरे " नाटक का मूल उद्देश्य है ।इस नाटक के सभी प्रतीक पात्र स्वार्थी राजनीति के दाँवपेंच खेलने में मशहूर हैं । महान चेहरा, एक, दो, तीन और चार के संवाद इस सच्चाई की ओर संकेत करते हैं ।इस नाटक के कोरस के ये शब्द ---

---

1 गिरिराज किशोर -घास और घोड़ा - पृष्ठ - 31 ।

"हम हैं एक ,तन हैं एक,
सब ही एक,एक ही एक ,
मटिया मेट,खाओ भात,
मारो लात,हा...हा....हा.."[1]

इसके मूल उद्देश्य की ओर स्पष्टतः संकेत कर देते हैं ।

"यह पथ अत्यंत कठिन है । अगर तैयार हुए हैं तो आपको अपना,अपने परिवार का,अपनी जाति का, अपने नगर का – सभी लगाव छोड़ने होंगे । बस केवल एक ध्येय आपके सामने होना चाहिए ..."[2] यह कथन नाटक के मूल उद्देश्य को प्रकट कर देने के लिए पर्याप्त है । इस नाटक में नाटककार ने राजनीतिक लोगों की स्वार्थी प्रेरणा प्रस्तुत की है । इस नाटक में किशोर जी ने राजनीति के असली रूप को दर्शाते हुए उसका पर्दाफाश किया है ।इस नाटक के अन्य पात्र एक ,दो, तीन और चार भी महान चेहरे की स्वार्थी राजनीति के ही दाँव खेलते हैं । इस प्रकार " चेहरे-चेहरे किसके चेहरे " नाटक का उद्देश्य मात्र यथातथ्य चित्रण करना नहीं बल्कि समकालीन राजनीति को मूल रूप में दिखाना है ।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याओं को प्रकट करने वाला किशोर जी का महत्वपूर्ण नाटक है " केवल मेरा नाम लो " ।गिरिराज किशोर का यह नाटक हमारी सामाजिक स्थिति को,व्यवस्था और आदमी के संघर्ष को और मनुष्य की विड़ंबना को ही प्रस्तुत करता है । पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से हमारी संतोषप्रधान संस्कृति विलुप्त होती जा रही है । प्रस्तुत नाटक में रजनी, चामड़िया , मिस्टर चामड़िया जैसे पात्रों द्वारा स्त्री पुरूष के संबंधों की विषमताओं का चित्रण किया है ।

यह नाटक आधुनिक युग में प्राप्त वासनामय व्यक्तियों की गाथा है । किशोर जी ने इस नाटक द्वारा अभिजात्य और मध्यवर्गीय पतनोन्मुख जीवन की आलोचना कर उसकी मनःप्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है । इस नाटक का रजनी बाह्य जीवन में एक कर्मठ, जुझारू, इमानदार और सामाजिक सरोकार वाला व्यक्ति है पर भावनात्मक स्तर पर परावलंबी है । नाटककार ने सुलभा के घुटन भरे जीवन की मार्मिक झलक दिखाने के साथ–साथ सामाजिक परंपरा की ओर भी संकेत किया

---

1 गिरिराज किशोर – चेहरे – चेहरे किसके चेहरे , पृष्ठ – 12 ।

2 वही, पृष्ठ – 15 ।

है । इस प्रकार यह नाटक आधुनिक स्त्री पुरूषों के निजी संबंधों पर प्रकाश डालता है ।

किशोर जी का " जुर्म आयद " महिला समाज के दुख को रेखांकित करने वाला नाटक है । गरीब स्त्रियों की हीनावस्था उम्मेदी के रूप में दिखलाना किशोर जी का मक्सद है । समाज के सभी पीड़ित वर्गों को रौंदती हुई सत्ता तथा सत्ता के व्यक्तिगत स्वार्थों के निर्मम तथा पाशविक उपयोग को इस नाटक में दिखाया है । उम्मेदी का अत्याचारी पुलिस दरोगा के साथ तथा आशा का अपने अत्याचारी पति के साथ संघर्ष भले ही पराजय में समाप्त होता है किंतु दोनों परिस्थितियों के आगे चुपचाप आत्म–समर्पण नहीं करती हैं ।

हमारी कानून-व्यवस्था पर व्यंग्य करना भी इस नाटक का एक और उद्देश्य है । इसके लिए वकील बचाव का यह कथन भी इसी ओर संकेत करता है –" वकील सरकार बार–बार कानून की दुहाई दे रहे हैं । कानून क्या सिर्फ किताबों में लिखी इबारत होती है ?या यह अदालत ,ये कुर्सियाँ, यह मंच जिस पर माननीय न्यायमूर्ति विराजमान हैं .... कानून है ? "[1]

3 **उद्देश्य शिल्प का मूल्यांकन––**

गिरिराज किशोर जी ने कहानी तथा उपन्यास साहित्य की ओर से मुड़कर कुछ नाटक लिखने और जनता की रूचि को परिमार्जित करने का निश्चय किया । उन्होंने अपने नाटकों को ज्यादा–से–ज्यादा स्वाभाविक,रूचिकर एवं यथार्थ बनाने का प्रयत्न किया है । इन नाटकों के निर्माण में उन्होंने यह भी ख्याल रखा है कि इससे कोई–न–कोई सीख प्राप्त हों । किशोर जी के नाटकों के नाम ही उनके उद्देश्यों के स्पष्ट प्रमाण हैं ।" प्रजा ही रहने दो " और " चेहरे – चेहरे किसके चेहरे " इन दो नाटकों में देश की समकालीन राजनीति के युद्ध को दिखलाना मुख्य प्रयोजन है । उद्देश्य की दृष्टि से किशोर जी का अत्यंत सफल नाटक है "प्रजा ही रहने दो " । इस नाटक में उन्होंने महाभारत की घटना का संदर्भ लेकर समकालीन राजनीतिक युद्ध की ओर संकेत किया है । "घास और घोड़ा" और "जुर्म आयद" इन दो नाटकों में हमारी कानून व्यवस्था किस प्रकार पूरी तरह खोखली बन गई है इसका वर्णन किया है ।

---

1 गिरिराज किशोर – जुर्म आयद, पृष्ठ – 24 ।

किशोर जी के नाटकों की प्रस्तावनाएँ एवं भूमिकाएँ इस बात की पुष्टि करते हैं कि समाज की विभिन्न प्रवृत्तियाँ किस प्रकार होती हैं । राजनीतिक नाटकों का निर्माण सामाजिक नाटकों के समान एक विशेष उद्देश्य का लेकर हुआ है ।इन नाटकों में समकालीन विभिन्न समस्याओं को उठाया है । नाटककार ने "प्रजा ही रहने दो " ,"चेहरे चेहरे किसके चेहरे " जैसे नाटकों द्वारा समकालीन राजनीति के पतनको स्पष्ट किया है और हमें खतरे से सचेत किया है । किशोर जी की सभी रचनाएँ सोद्देश्य हैं और एक निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर निर्मित हुई हैं । स्पष्ट है कि इन रचनाओं में उन्होंने राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना के प्रतिपादन की ओर मुख्य रूप से ध्यान दिया है । समय की विशिष्ट माँग और समकालीन परिस्थितियों ने किशोर जी को नाटक लिखने के लिए प्रेरित किया है । इनके नाटकों में युग की भावनाओं एवं विचारपद्धति के अनुरूप बहुत से सूत्र दिखाई देते हैं । गिरिराज किशोर जी के नाटकों के उद्देश्य के बारे में गिरिश रस्तोगी लिखते हैं " समाज के प्रति प्रेम और उसकी विद्रुपताओं के प्रति आक्रोश ही गिरिराज किशोर को रचनात्मक क्रिया की ओर प्रेरित करता है। मनुष्य से समाज से लगाव और पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक असंगतियाँ ही गिरिराज किशोर की लेखकीय प्रवृत्ति के अंकुरित होने का कारण रही है ।"[1] स्पष्ट है कि गिरिराज किशोर जी की सभी रचनाएँ सोद्देश्य हैं ।

निष्कर्ष--

किशोर जी के नाट्य सृजन के मूल में पारिवारिक , सामाजिक एवं राजनीतिक उद्देश्य निहित हैं । उन्होंने समकालीन विभिन्न परिस्थितियाँ देखकर ही अपने नाटकों का सृजन किया है । निश्चय ही किशोर जी की सभी रचनाएँ विभिन्न उद्देश्यों को लेकर लिखी गई हैं । नाटककार ने इन नाटकों में प्रमुख समस्याओं के साथ ही समकालीन सामाजिक विकृतियों के संबंध में उचित संकेत देने के साथ व्यंग्य भी किए हैं । किशोर जी के नाटकों में हमारे जीवन की यथार्थ ,स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति होने के कारण और इनसे हमारा अपनत्व स्थापित होने से रसात्मकता का निर्माण तो सहज ही हो जाता है ।

स्पष्ट है कि सामाजिक स्वतंत्रता किशोर जी के नाटकों का प्रमुख ध्येय है । नाटककार समाज को उन सामाजिक और नैतिक विषमताओं से मुक्त करना चाहता है जो जीवन के स्वाभाविक प्रवाह को आज भी जटिल,जर्जर एवं अवरूद्ध बनाए हुए हैं । नाटककार ने राजनीतिक समस्याओं के

---

1 गिरिश रस्तोगी –रागकालीन हिंदी नाटककार, पृष्ठ – 78 ।

साथ समाज की अन्य अनेक समस्याओं को स्वाभाविक, प्रभावपूर्ण एवं सुंदर शैली में प्रस्तुत किया है ।

संक्षेप में गिरिराज जी लक्ष्य की अभिव्यक्ति में पूर्णतया सफल रहे हैं । किशोर जी के अधिकांश नाटक करूण व ट्रैजिक स्थल पर समाप्त होते हैं । " केवल मेरा नाम लो " नाटक तो सुलभा की दृष्टि से एक गंभीर करूणा पैदा कर देता है । इन नाटकों में किशोर जी का दृष्टिकोण यथार्थवादी है । उनका लक्ष्य समाज की विभिन्न विकृतियों व असंगत रूढ़ियों को अभिव्यक्त करना है और उन पर चोट कर समाज को वास्तविकता के प्रत्यक्ष रूप का अनुभव करवाकर उन्हें प्रगति की ओरले जाना है । इसी उद्देश्य को हम स्पष्ट रूप से इनके प्रायः सभी नाटकों में ढूंढ़ सकते हैं । नाटककार ने मध्यवर्गीय और पीड़ित समाज की यथार्थ परिस्थितियों का विश्लेषण किया है । इन नाटकों की सोद्देश्यता बिलकुल स्पष्ट है ।इनमें नाटककार ने हमारी सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ परिस्थितियों का उद्घाटन किया है ।